BGDG-172: जेंडर संवेदनशीलता: समाज और संस्कृति
Tutor Marked Assignments (TMA)

पाठ्यक्रम कोड: BGDG 172

असाइनमेंट कोड: ASST / TMA / 2026-27

कुल अंक: 100

खंड A

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. समझाइए कि लैंगिकता (Sexuality) का सामाजिक निर्माण किस प्रकार होता है। (20 अंक)
2. महिलाओं के श्रम और रोजगार से संबंधित मुद्दों का वर्णन कीजिए तथा महिलाओं के श्रम और रोजगार पर जेंडर के प्रभावों/निहितार्थों का परीक्षण कीजिए। (20 अंक)

खंड B

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

1. सिनेमा में जेंडर भूमिकाओं की व्याख्या कीजिए तथा भारतीय सिनेमा से उपयुक्त उदाहरण दीजिए। (10 अंक)
2. प्रजनन स्वास्थ्य (Reproductive Health) के संकेतकों की व्याख्या कीजिए। (10 अंक)
3. दिव्यांगता में जेंडर से संबंधित मुद्दों की विस्तार से व्याख्या कीजिए। (10 अंक)

खंड C

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

1. पितृसत्ता (Patriarchy) पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (6 अंक)
2. 'लैंगिकता का सामाजिक निर्माण (Social Construction of Sexuality)' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (6 अंक)
3. पुरुषत्व (Masculinity) के विभिन्न रूपों की व्याख्या कीजिए। (6 अंक)

4. 'यौन उत्पीड़न – मिथक और वास्तविकता (Sexual Harassment – Myth and Reality)' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (6 अंक)
5. 'शब्दावली में जेंडर अंतर (Gender Difference in Vocabulary)' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (6 अंक)

1. समझाइए कि लैंगिकता (Sexuality) का सामाजिक निर्माण किस प्रकार होता है। (20 अंक)

उत्तर:

लैंगिकता केवल किसी व्यक्ति की शारीरिक विशेषताओं या प्रजनन क्षमता का नाम नहीं है। इसमें इच्छाएँ, आकर्षण, पहचान, अंतरंग संबंध, व्यवहार, भावनाएँ और इनसे जुड़ी सामाजिक अपेक्षाएँ भी शामिल होती हैं। शरीर और जैविक प्रक्रियाओं का अपना महत्त्व है, पर उनका अर्थ समाज में सीखा और समझा जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि लैंगिकता का सामाजिक निर्माण होता है। अलग-अलग समय, समुदाय और संस्कृतियों में स्वीकार्य माने जाने वाले संबंधों तथा व्यवहारों के नियम समान नहीं होते। यह भिन्नता इस विचार को स्पष्ट करती है कि लैंगिकता को केवल जीव-विज्ञान से नहीं समझा जा सकता।

परिवार और प्रारंभिक समाजीकरण

बच्चे जन्म के बाद परिवार से यह सीखना शुरू करते हैं कि लड़कियों और लड़कों के लिए कौन-सा व्यवहार उचित माना जाता है। कपड़ों, खिलौनों, घर के काम, बाहर जाने की स्वतंत्रता और भावनाएँ व्यक्त करने के तरीकों में अंतर किया जाता है। कई घरों में लड़कियों को संकोची तथा लड़कों को पहल करने वाला बनने की सीख मिलती है। ये नियम सहज और स्वाभाविक दिखने लगते हैं, जबकि वे बार-बार अभ्यास से बने होते हैं। किशोरावस्था में मित्रों और रिश्तेदारों की टिप्पणियाँ भी शरीर के प्रति दृष्टिकोण और संबंधों को प्रभावित करती हैं। परिवार का सकारात्मक, समानतापूर्ण वातावरण इन रूढ़ियों को कम कर सकता है।

संस्कृति, परंपरा और नैतिक मान्यताएँ

समाज की संस्कृति यह निर्धारित करने में बड़ी भूमिका निभाती है कि प्रेम, विवाह, अंतरंगता और परिवार को किस प्रकार समझा जाए। कुछ सामाजिक व्यवस्थाओं में विवाह के भीतर यौन संबंध को विशेष मान्यता मिलती है और विवाह से बाहर के संबंधों पर कड़ा सामाजिक नियंत्रण रहता है। सम्मान, मर्यादा और परिवार की प्रतिष्ठा जैसी धारणाओं का उपयोग अक्सर महिलाओं के कपड़ों, मित्रता और आने-जाने की स्वतंत्रता पर निगरानी के लिए किया जाता है। परंपराएँ एक जैसी नहीं